पाठ 8 **नवम्बर 17-23**

विश्वास में एकता

सब्त अपराह्न **नवम्बर 17**

इस सप्ताह के पाठ के लिए पढ़ें : प्रेरि० 4:8-12; प्रेरि० 1:11; मत्ती० 25:1-13; इब्रा० 9:11, 12; निर्ग० 20:8-11; 1कुरि० 15:51-54.

याद वचन: *"किसी दूसरे के द्वारा उद्धार नहीं; क्योंकि स्वर्ग के नीचे मनुष्यों में और कोई दूसरा नाम नहीं दिया गया, जिसके द्वारा हम उद्धार पा सकें" (प्रेरि० 4:12)।*

सन् 1888 में सेवेंथ-डे-ऐडवेंटिस्टों ने बाईबल के कुछ खास पदस्थल के रूपांतरण पर सूक्ष्म वाद-विवाद के काल का अनुभव किया। जब पादरीगण और कलीसिया के अगुए दानिएल 7 की भविष्यवाणी के दस सींगों की पहचान और गलातियों 3:24 में व्यवस्था पर बहस कर रहे थे, महसूस किया कि किस प्रकार उनकी शत्रुतापूर्ण प्रवृति जो एक दूसरे के प्रति थी उनकी सहभागिता और मित्रता को नष्ट कर रही थी और इस प्रकार कलीसिया की एकता और कार्य को बिगाड़ रही थी।

एलेन जी० ह्वाईट इस किस्म के कार्यों के प्रति गहरा अफसोस जताती थी और इस बहस में सम्मिलित सभों को प्रोत्साहित करती थी कि यीशु के साथ उनके संबंध के विषय में उन्हें सतर्कतापूर्वक सोचने की जरूरत थी खासकर जब वे असहमत होते हैं। यीशु के लिये उनका प्रेम उनके चरित्र में प्रकट होना था। उसने यह भी कहा कि हमें कलीसिया में सबों से यह उम्मीद नहीं करनी चाहिए कि बाईबल के सभी रूपांतरण से वे राजी हों।

परन्तु उसने जोर दिया कि हमें आवश्यक ऐडवेंटिस्ट विश्वास के मामले में समझदारी की एकता को बरकरार रखना चाहिए। इस सप्ताह हम कुछ आवश्यक बाईबलीय शिक्षा पर प्रकाश डालेंगे जो हमें ऐडवेंटिस्ट बनाती है और विश्वास में हमारी एकता को आकार देती है।

रविवार **नवम्बर 18**

यीशु में उद्धार

यद्यपि सेवेंथ-डे-ऐडवेंटिस्टों के तौर पर सम्मिलित रूप से हमारे पास दूसरे मसीही निकायों के साथ बहुत कुछ है, हमारे विश्वास का संग्रह बाईबलीय सच्चाई की अद्‌भुत प्रणाली है जो मसीही संसार में अन्य किसी के

---

* सब्त, नवम्बर 24 की तैयारी के लिये इस सप्ताह के पाठ का अध्ययन करें।

पास नहीं है। ये सच्चाईयाँ परमेश्वर की अंतिम समय की श्रेष कलीसिया के तौर पर हमें परिभाषित करने में मदद करती हैं।

पढ़ें प्रेरि० 4: 8-12, 10: 43.

उद्धार की योजना की अपनी समझ में यीशु मसीह के स्थान को पतरस क्या महत्त्व देता है ?

_____

_____

प्रेरित पौलुस ने कुरिन्थियों को बताया कि सुसंवाद यह है "परमेश्वर ने मसीह में होकर अपने साथ संसार का मेल-मिलाप कर लिया (2कुरि० 5: 19)। पिता के साथ हमारे मेल-मिलाप का साधन मसीह की मृत्यु है जो पाप और मृत्यु द्वारा छोड़ी गई खाई के लिये सेतु का काम करती है। सदियों तक मसीहियों ने यीशु की मृत्यु, पुनरुत्थान, और मेल-मिलाप जिसे पाने के लिये वह आया, उसपर मंथन किया है। यही मेल-मिलाप की प्रक्रिया प्रायश्चित कहलाती है। यह एक होने या समझौता करने की स्थिति है। उसी प्रकार से प्रायश्चित संबंध में मेल-मिलाप को व्यक्त करता है, और जब मनमुटाव होता है यही सामंजस्य मेल-मिलाप का परिणाम होता है। इस प्रकार कलीसिया की एकता इस मेल-मिलाप का वरदान है।

यीशु की मृत्यु और पुनरुत्थान के अर्थ के विषय में यह अवतरण क्या सिखलाता है ?

रोम० 3: 24,25 _____

1यूहन्ना० 2: 2 _____

1यूहन्ना० 4: 9-10 _____

1पतरस 2: 21-24 _____

यद्यपि हम बहुत से अन्य मसीही निकायों के साथ सम्मिलित रूप से मसीह की मृत्यु और पुनरुत्थान में इस विश्वास को पकड़े रहते हैं, हम इस संदर्भ में इसे उद्घोषित करते हैं "अनंत सुसमाचार" (प्रका० वा० 14: 6), प्रकाशित वाक्य 14: 6-12 में तीन दूतों के संवाद का भाग। सेवेंथ-डे ऐडवेंटिस्टों के तौर पर हम इन संवादों पर जोर देते हैं जो अन्य मसीही संस्था नहीं करती है।

मसीह की मृत्यु और पुनरुत्थान और आशा जो यह प्रदान करती है- इसकी वास्तविकता को हमेशा आपके सामने रखना कैसे सीख सकते हैं ?

सोमवार **नवम्बर 19**

मसीह का दूसरा आगमन

प्रेरितों और प्रारंभिक मसीहियों ने मसीह की वापसी को "धन्य आशा" कहा (तीतुस 2:13), और उन्होंने शास्त्र की सभी भविष्यवाणियों और प्रतिज्ञाओं को दूसरे आगमन पर पूरी होने की आशा की। सेवेंथ-डे-ऐडवेंटिस्ट लोग अभी भी इस विश्वास को मजबूती से पकड़े हुए हैं। वास्तव में हमारा नाम "ऐडवेंटिस्ट" इसे स्पष्ट रूप से वर्णन करता है। वे सब जो मसीह को प्रेम करते हैं उम्मीद के साथ देख आशा करते हैं कि वह दिन आयेगा जब वे उसके साथ आमने-सामने बात-चीत करेंगे। जब तक वह दिन नहीं आता है मसीह के दूसरे आगमन की प्रतिज्ञा परमेश्वर के लोगों के तौर पर हम में एक समान प्रभाव डालता है।

मसीह के वापस आने के तरीके के विषय में अग्रांकित अवतरण क्या सिखलाते हैं? मसीह के वापस आने के कुछ प्रचलित धारणाओं से यह किस प्रकार भिन्न है? प्रेरि० 1:11; मत्ती 24:26-27; प्रका० वा० 1:7; 1थिस्स० 4:13-18; प्रका० वा० 19:11-16.

बाईबल बार-बार हमें आश्वस्त करती है कि यीशु अपने छुड़ाए हुए लोगों का दावा करने के लिये पुनः आयेगा। जब यह घटना घटेगी अटकलबाजी नहीं होनी चाहिए, क्योंकि यीशु ने स्वयं कहा, "उस दिन और उस घड़ी के विषय में कोई नहीं जानता, न स्वर्ग के दूत और न पुत्र परन्तु केवल पिता" (मत्ती 24:36)। हम यीशु के आने के दिन के विषय नहीं जानते।

अपनी सेवकाई के अंत में, यीशु ने दस कुँवारियों का दृष्टान्त बतलाया (मत्ती 25:1-13) ताकि कलीसिया का अनुभव बतला सके क्योंकि यह उसके दूसरे आगमन का इंतजार करती है। दो दल की कुँवारियाँ दो प्रकार के लोगों को पेश करती हैं जो यीशु के लिये इंजार करने का दावा करते हैं। बाहरी तौर से ये दो दल एक समान दिखते हैं; परन्तु जब यीशु के आने में देर हुई, उनकी वास्तविक भिन्नता स्पष्ट होती है। देर होने के बावजूद एक दल ने अपनी उम्मीद को जिन्दा रखा और उचित आत्मिक तैयारी की । इस दृष्टान्त के द्वारा यीशु ने अपने चेलों को सिखलाना चाहा कि मसीही अनुभव उत्तेजना या खुशी पर आधारित नहीं होना चाहिए। वरन परमेश्वर के अनुग्रह में निरंतर भरोसा और विश्वास में दृढ़ता पर टिकी होनी चाहिए जौभी कि परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं के पूर्ण होने के स्पष्ट प्रमाण न हो। यीशु आज भी हमें उसके

किसी भी समय आने के लिये सतर्क रहने और तैयार होने के लिये आमंत्रित करता है।

यद्यपि हमारा नाम "सेवेंथ-डे-ऐडवेंटिस्ट" गवाही देता है कि दूसरा आगमन हमारे लिये कितना अहम है, व्यक्तिगत स्तर पर हम दूसरे आगमन की वास्तविकता को हमारे सामने किस प्रकार रख सकते हैं? जैसा कि वर्ष गुजरते जाते हैं, हम कैसे गलत नहीं कर सकते हैं जिस प्रकार यीशु ने दस कुवाँरियों के दृष्टान्त में चेताया ?

मंगलवार **नवम्बर 20**

स्वर्गीय पवित्र स्थान में यीशु की सेवकाई

पुराने नियम में परमेश्वर ने मूसा को एक मंदिर या पवित्र स्थान बनाने की आज्ञा दी जो इस पृथ्वी पर सेवकाई के तौर पर उसका "वास" स्थान हो (निर्ग० 25: 8)। यद्यपि इसकी सेवकाई, पवित्र स्थान वहाँ है जहाँ इस्राएल के लोगों को उद्धार की योजना सिखाई गई। बाद में, राजा सुलैमान के समय में ले जाने योग्य मंदिर के स्थान पर शानदार मंदिर बना (1राजा 5: 8)। दोनों मंदिर एवं तम्बू का ढांचा स्वर्गीय पवित्र स्थान के समान था, "और पवित्र स्थान और उस सच्चे तम्बू का सेवक हुआ जिसे किसी मनुष्य ने नहीं वरन् प्रभु ने खड़ा किया है" (इब्रा० 8: 2; इसे भी देखें निर्ग० 25: 9-40)।

सम्पूर्ण बाईबल में यह स्वीकारा गया है कि स्वर्गीय पवित्र स्थान है जो परमेश्वर के लिये मुख्य रूप से रहवास के तौर पर सेवकाई देता है। इसलिये हम उत्साहित हैं "... हम अनुग्रह के सिंहासन के निकट हियाव बाँकर चलें कि हम पर दया हो, और वह अनुग्रह पाएँ जो आवश्यकता के समय हमारी सहायता करे" (इब्रा० 4: 16)।

जिस प्रकार पार्थिव मंदिर में याजकीय सेवकाई के दो पहलू थे- पहला पवित्र स्थान में प्रतिदिन के आधार पर और तब महापवित्र स्थान में साल में एक बार- पवित्रशास्त्र भी स्वर्ग में यीशु की सेवकाई के दो पहलूओं का वर्णन करता है। स्वर्ग में, पवित्र स्थान में उसकी सेवकाई मध्यस्थता, क्षमाशीलता, मेल-मिलाप, और पुनर्स्थापन के द्वारा वर्णन की गई है। पश्चात्तापी पापियों के लिये बिचवई यीशु के द्वारा पिता तक तत्काल पहुँच की व्यवस्था है (1यूहन्ना 2: 1)। सन् 1844 से महापवित्र स्थान में यीशु की सेवकाई न्याय और शुद्धिकरण से सरोकार रखता है जो साल में एक बार प्रायश्चित के दिन होता था (लै०व्य० 16)। पवित्र स्थान की शुद्धिकरण की सेवकाईं भी यीशु के बहाये खून पर आधारित है। इस दिन जो प्रायश्चित होता था मसीह द्वारा पाप

की उपस्थिति को दूर करने के गुणों के अंतिम प्रयोग की परछाई थी। और इस प्रकार परमेश्वर के अधीन एक सुसंगत शासन में संपूर्ण मेल-मिलाप हासिल करना था। इस दो-पक्षीय सेवकाई का सिद्धान्त उद्धार की सम्पूर्ण योजना की समझ के लिये एक अद्‌भुत ऐडवेंटिस्ट योगदान है।

बुधवार **नवम्बर 21**

सब्त

सातवाँ दिन सब्त दूसरा विशेष बाईबलीय शिक्षा है जिसे सेवेंथ-डे-ऐडवेंटिस्ट विश्वास करते और समर्थन देते हैं। यह एक खास सिद्धान्त है जो हमारे बीच एकता और सहभागिता लाता है। यह ईसाई जगत में एक अपवाद की तरह केवल हम लोग ही इसका अनुसरण करते हैं।

सब्त, सृष्टि के सप्ताह ही से मनुष्य के लिये परमेश्वर का दान है (उत्प० 2: 1-3)। सृष्टि में तीन विशिष्ट ईश्वरीय काम की स्थापना हुई: (1) परमेश्वर ने सब्त को विश्राम किया, (2) आशिष दी और (3) पवित्र किया। इन तीन कामों ने सब्त को परमेश्वर के खास दान के रूप में स्थापित किया और मानव जाति को पृथ्वी पर स्वर्ग की असलियत का अनुभव कराया और परमेश्वर के छ: दिन की सृष्टि को समर्थन दिया। एक मशहूर रब्बी, अब्राहम जोशुआ हेस्थेल ने सब्त को "समय में एक महल" कहा है, एक पवित्र दिन जब परमेश्वर अपने लोगों से खास तरीके से मुलाकात करता है।

मनुष्य के लिये सब्त के अर्थ के विषय में अग्रांकित अवतरण क्या सिखलाते हैं (निर्ग० 20: 8-11; व्यवस्था० 5: 12-15; यहेज० 20: 12-20.

यीशु के उदाहरण का अनुसरण करने की हमारी इच्छा (लूका 4: 16) में सेवेंथ-डे-ऐडवेंटिस्ट सातवाँ दिन सब्त को मानते हैं। सब्त उपासना में यीशु की सहभागिता प्रकट करती है कि उसने इसे विश्राम और उपासना के दिन के रूप में समर्थन दिया। उसके कुछ चमत्कार सब्त के दिन हुए ताकि चंगाई के परिमाण को सिखलाया जा सके जो सब्त की सहभागिता से आता है (देखें लूका 13: 10-17)। प्रेरितों और प्रारंभिक मसीहियों ने समझ लिया कि यीशु ने सब्त को लोप नहीं किया था; उन्होंने स्वयं इसे माना और उस उपासना में शामिल हुए (प्रेरि० 13: 14,42,44; 16: 13; 17: 2; 18: 4)।

सब्त का दूसरा सुंदर आयाम पाप से हमें छुड़ाने का इसका चिह्न है। सब्त मिस्र की बंधुआई से इस्राएल के लोगों के लिये परमेश्वर के उद्धार की यादगारी है जिन्हें उसने कनान देश में विश्राम की प्रतिज्ञा दी थी (व्य०वि०

5: 12-15)। इस विश्राम में इस्राएल का पूर्ण रूप से प्रवेश में असफलता के बावजूद, क्योंकि इन्होंने बार-बार आज्ञा का उल्लंघन किया और मूर्ति पूजा की, परमेश्वर अभी प्रतिज्ञा करता है कि "परमेश्वर के लोगों के लिये सब्त का विश्राम बाकी है" (इब्रा० 4: 9)। वे सब जो विश्राम में प्रवेश करना चाहते हैं विश्वास के द्वारा यीशु के उद्धार में प्रवेश कर सकते हैं। सब्त पालन मसीह में इस आत्मिक विश्राम को संकेत करता है, और हम केवल उसकी काबलियत पर भरोसा करते हैं, और कामों पर नहीं कि हम पाप से बचाये जायें और हमें अनंत जीवन मिले। (देखें इब्रा० 4: 10, मत्ती० 11: 28-30)।

किस वास्तविक तरीके से सब्त ने आप को एकता और सहभागिता को अनुभव करने में मदद की है जिसे परमेश्वर अपने लोगों के लिये चाहता है ?

बृहस्पतिवार **नवम्बर 22**

मृत्यु और पुनरुत्थान

सृष्टि में, "और यहोवा परमेश्वर ने आदम को भूमि की मिट्टी से रचा और उसके नथुनों में जीवन का श्वास फूंक दिया; और आदम जीवता प्राणी बन गया" (उत्प० 2: 7)। मनुष्य की सृष्टि का यह वर्णन प्रकट करता है कि जीवन परमेश्वर से प्राप्त होता है। क्या अमरता इस जीवन का स्वाभाविक पहलू है? बाईबल बतलाती है कि अमर केवल परमेश्वर है (1तीमु 6: 16); मनुष्य को जन्म से अमरता नहीं दी जाती है, परमेश्वर से विपरीत मनुष्य मरणशील हैं। पवित्र शास्त्र हमारे जीवन को भाप से तुलना करता है "भाप थोड़ी देर दिखाई देती है, फिर लोप हो जाती है" (याकूब 4: 14), मृत्यु में हमारा जीवन निद्रा की स्थिति में चला जाता है जहाँ कोई चेतना नहीं होता है (देखें सभोप० 9: 5-6, 10; भजन 146: 17; यूहन्ना 11: 11-15.

यद्यपि लोग जन्म ही से मरणशील हैं, बाईबल अमरता के स्रोत के तौर पर यीशु मसीह के विषय बात करती है और हमें बतलाती है कि वह अमरत्व की प्रतिज्ञा देता है और उन सभों को अनंत जीवन देता है जो उसके उद्धार में विश्वास करते हैं। "परमेश्वर का वरदान हमारे प्रभु यीशु मसीह में अनन्त जीवन है" (रोम० 6: 23)। "जिसने मृत्यु का नाश किया, और जीवन और अमरता को उस सुसमाचार के द्वारा प्रकाशमान कर दिया (2तीमु० 1: 10)। "क्योंकि परमेश्वर ने जगत् से ऐसा प्रेम रखा कि उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे, वह नाश न हो, परन्तु अनन्त जीवन पाए (यूहन्ना 3: 16)। इस प्रकार मृत्यु के बाद जीवन की आशा है।

पढ़ें 1कुरि० 15: 51-54 और थिस्स० 4: 13-18. मृत्यु और जीवन के विषय में पदस्थल हमें क्या बतलाते हैं? मनुष्य को अमरता कब दी जायेगी?

प्रेरित पौलुस इसे स्पष्ट करता है कि परमेश्वर लोगों को मृत्यु के समय नहीं वरन् पुनरुत्थान पर अमरता प्रदान करता है, जब आखिरी नरसिंगा फूंका जायेगा। विश्वासीगण यीशु को उद्धारकर्त्ता स्वीकारते ही अनंत जीवन की प्रतिज्ञा को प्राप्त करते हैं, परन्तु अमरता केवल पुनरुत्थान में दी जाती है। नये नियम में मृत्यु के तुरंत बाद आत्माओं के स्वर्ग जाने के विषय कोई जानकारी, नहीं है; यह शिक्षा के बल मूर्तिपजकों में प्रचलित है जब प्राचीन यूनानी दर्शन में वापस जाते हैं, यह पुराने या नये नियम में नहीं मिलता है।

मृत्यु की हमारी समझ किस प्रकार दूसरे आगमन की प्रतिज्ञा को हमें और अधिक प्रशंसा करने में मदद करती है? सेवेंथ-डे-ऐडवेंटिस्टों के तौर पर यह विश्वास किस प्रकार हमें सशक्त रूप से एक करता है ?

शुक्रवार **नवम्बर 23**

अतिरिक्त अध्ययन: "Ellen G . White, "The Foundations, Pillars, and Landmarks," PP. 28-32, in Counsels to Writers and Editors. Read the article "Doctrines, Importance of," PP. 778 779 in The Ellen G. White Encyclopedia.

सेवेंथ-डे-ऐडवेंटिस्टों के तौर पर हम दूसरे मसीही निकायों के साथ महत्त्वपूर्ण विश्वासों को सामान्य तौर पर साझा करते हैं। बेशक जो खास है वह है हमारे बदले में यीशु की मृत्यु और प्रायश्चित के द्वारा केवल विश्वास से उद्धार में विश्वास करना। हम दूसरे मसीहियों के साथ विश्वास करते हैं कि हमारी धार्मिकता हमारे कामों में नहीं वरन मसीह की धार्मिकता में पाई गई है, जो विश्वास के द्वारा हमें मिली है जो अनुग्रह का अनमोल वरदान है। एलेन जी ह्वाईट ने उपयुक्त ही लिखा है "मसीह हमारे योग्य व्यवहार किया गया ताकि हम उसके योग्य व्यवहार किये जायें। वह हमारे पापों के खातिर निन्दित किया गया जिसमें उसका कोई भाग नहीं था, ताकि हम उसकी धार्मिकता में न्यायोचित ठहरें जिसमें हमारा कोई भाग नहीं था। उसने हमारी मृत्यु सही ताकि हम उसका जीवन पाएँ।"– The Desire of Ages, P. 25. इसी वक्त, सम्पूर्ण रूप से हमारा मूलभूत विश्वास और अभ्यास एवं जीवन शैली जो उन विश्वासों से निकलती है मसीही संसार में हमें अनोखा बनाती है। इसे वैसा ही होना चाहिए अन्यथा सेवेंथ-डे-ऐडवेंटिस्ट का क्या मतलब? यीशु के लिये हमारा प्रेम और शिक्षा जिसकी हम घोषणा करते हैं, हमारे बीच में अति सशक्त जुड़ाव का घटक होना चाहिए।

विचार-विमर्श के लिये प्रश्नः

1. विश्वास और कार्य (Faith and Works) पेज 103 में एलेन जी० ह्वाईट पापों की क्षमा को न्याय के साथ समीकरण (बराबर) करती है। मसीह में हमारा न्याय और पाप क्षमा की प्रशंसा किस प्रकार दूसरे भाई और बहनों के साथ हमारी सहभागिता और समुदाय के लिये एक बुनियाद है ?
2. कलीसिया की एकता के संदर्भ में हमारे सिद्धान्तों के महत्त्व पर चिंतन करें। अर्थात् किस चीज ने करोड़ों लोगों को जाति, धर्म, राजनीति, और सांस्कृतिक पृष्ठभूमि के बावजूद एक सूत्र में लाया है? कार्य और संवाद के संदर्भ में ही नहीं परन्तु कलीसिया की एकता के विषय में सिद्धान्त कितना महत्त्व रखता है?
3. हमारा नाम सेवेंथ-डे-ऐडवेंटिस्ट दो खास शिक्षाओं को संकेत करता है- सातवाँ दिन सब्त और दूसरा आगमन। हमारे नाम का एक भाग सृष्टि को और दूसरा उद्धार को संकेत करता है। ये दो शिक्षाएँ किस प्रकार संबद्ध हैं और किस तरीके से वे एक साथ इस आशय को संक्षिप्त रूप से अधिकृत (कब्जा) करते हैं कि लोगों के रूप में हम कौन हैं?

सारांशः- सेवेंथ-डे-ऐडवेंटिस्ट लोग सामान्य तौर पर बहुत से मूलभूत सिद्धान्तों को धारण करते हैं। कुछेक को हम सामान्य तौर पर दूसरे मसीहियों के साथ धारण करते हैं। इन शिक्षाओं के कारण एक विशेष कलीसिया के तौर पर हमारी पहचान बनती है और यीशु में हमारी एकता की नींव खड़ी होती है।